

UP Board Notes Class 8 Hindi Chapter 27 डॉ० भीमराव रामजी अम्बेडकर (महान व्यक्तित्व)

पाठ को सारांश

भीमराव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल, 1891 ई० में इन्दौर के महु नामक स्थान पर हुआ। इनके पिता राम जी फौज में सूबेदार थे। इनकी माता का नाम भीमाबाई सकपाल था। 1907 ई० में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् एलफिंस्टन कालेज से इन्होंने इण्टर पास की। 17 वर्ष की आयु में रमाबाई से इनका विवाह हो गया। बड़ौदा नरेश सयाजीराव ने इन्हें छात्रवृत्ति दी। 1912 ई० इन्होंने बी०ए० पास किया। न्यूयार्क विश्वविद्यालय से 1915 ई० में एम०ए० की डिग्री प्राप्त की। कोलम्बिया विश्वविद्यालय ने इन्हें डॉ० ऑफ फिलॉसफी की उपाधि दी। अर्थशास्त्र व राजनीति के अध्ययन के लिए ये लन्दन गए परन्तु सयाजीराव ने छात्रवृत्ति बन्द कर दी। ये विवश होकर स्वदेश लौटे।

31 जनवरी, 1920 ई० को इन्होंने 'मूकनायक' अखबार निकाला। इसका उद्देश्य जातिप्रथा की समाप्ति तथा अस्पृश्यता का निवारण करना था। 21 मार्च, 1920 ई० में इन्होंने कोल्हापुर दलित सम्मेलन की अध्यक्षता की। कोल्हापुर नरेश ने इन्हें दलितों का उद्धारक कहा। सन् 1920 ई० में इन्होंने पुनः लन्दन जाकर वकालत पास की। 27 मई, 1935 ई० को इनकी पत्नी रमाबाई का निधन हो गया। सन् 1936 ई० में इन्होंने 'इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी' राजनैतिक दल का गठन किया। 1937 ई० के प्रान्तीय चुनाव में ये भारी बहुमत से विजयी हुए। जुलाई 1941 ई० में इन्हें गणित रक्षा सलाहकार समिति का सदस्य चुना गया। सन् 1945 ई० में इन्होंने पीपुल्स एजुकेशन सोसाइटी की स्थापना की। मार्च 1952 ई० में इन्हें राज्यसभा के लिए चुना गया और ये भारत सरकार के कानून मंत्री बने। 14 अक्टूबर, 1956 ई० को इन्होंने बौद्धधर्म ग्रहण कर लिया। 6 दिसम्बर 1956 ई० को इनका देहान्त हो गया। भारत सरकार ने मरणोपरान्त उन्हें 'भारत रत्न' से सम्मानित किया।

डॉ० भीमराव अम्बेडकर ने अनेक उल्लेखनीय कार्य किए। सन् 1924 में उन्होंने बहिष्कृत हितकारिणी सभा की स्थापना की जिसका उद्देश्य छुआछूत दूर करना था। इन्होंने सरकार द्वारा दलितों की सेना में भर्ती पर रोक को लेकर 20 मार्च, 1927 ई० को महाड़ में दलित सम्मेलन बुलाया। दलितों के हित के लिए लेजिस्लेटिव काउंसिल के लिए इन्हें सन् 1929 ई० में मनोनीत किया गया। इन्होंने शिक्षा, मद्यनिषेध, कर व्यवस्था, महिला और बाल कल्याण विषयों पर कड़ा रुख अपनाया। इन्होंने प्रथम, द्वितीय व तृतीय गोलमेज सम्मेलन में दलितों का प्रतिनिधित्व किया। दलितों के उत्थान के लिए गांधी जी के साथ पूना पैक्ट किया। इनकी प्रमुख रचनाएँ- द बुद्ध एण्ड हिज गोस्पेल, थाट्स ऑन पाकिस्तान, रिवोल्यूशन्स एण्ड काउण्टर रिवोल्यूशन्स इन इण्डिया हैं।